P: ISSN NO.: 2321-290X　RNI : UPBIL/2013/55327　VOL-8* ISSUE-7* March- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X　Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

श्रीहर्ष के नैषधीयचरितम् में व्याप्त दार्शनिक तत्व

Philosophical Elements Pervading Sri Harsha's Nadiadhicharitam

Paper Submission: 06/03/2021, Date of Acceptance: 20/03/2021, Date of Publication: 22/03/2021

पुष्पा
सह आचार्य,
संस्कृत विभाग,
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

सारांश

श्रीहर्ष ने अपने महाकाव्य नैषधीयचरितम् में दार्शनिक तत्व जैसे सृष्टि, भाग्यवाद, जन्म–मृत्यु, पुनर्जन्म, कर्म–फल, मोक्ष , स्वर्ग–नर्क, आत्मा और परमात्मा इत्यादि विषयों पर भरपूर प्रकाश डाला है। महाकवि ने भारतीय नौ दर्शनों पर (छह आस्तिक दर्शन, तीन नास्तिक दर्शन) श्लोकों के माध्यम से अपने विचारों को प्रकट किया है। यह श्रृंगार प्रधान रचना है परंतु फिर भी इसमें दार्शनिकता का पुट मिलता है।

Shriharasha has given a lot of light on philosophical elements such as creation, fatalism, birth-death, rebirth, karma-fruit, salvation, heaven-hell, soul and God etc. in his epic Naashadhicharitam. The Mahakavi has revealed his views on the nine Indian philosophies (six believer philosophies, three atheistic philosophies) through verses. It is a makeup predominant work, but still there is a touch of philosophicality in it.

मुख्य शब्द : दर्शन, महाकाव्य, श्रीहर्ष, रचना और आत्मा।
Philosophy, Epic, Shriharasa, Composition and Soul.

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में महाकवि श्रीहर्ष का नाम सम्माननीय है क्योंकि उनकी कृति नैषधीयचरितम् एक अलौकिक कृति है, उनका यह महाकाव्य अत्यंत ही प्रसिद्ध है, जिसमें नल और दमयंती कि प्रणय कथा को सुंदर तरीके से श्लोकों के माध्यम से 22 सर्गो में निबद्ध किया है

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य राजा नल और दमयंती की प्रणय कथा को दार्शनिक तत्वों के साथ समाहित कर प्रस्तुत करना जो इस शोध पत्र में उद्घाटित किया है, भारतीय संस्कृति के आधारभूत पुरुषार्थ–चतुष्टय, सहयोग, समन्वय, दार्शनिकता, सामंजस्य, सहिष्णुता, मानवीयता और जीवन मूल्य नवीन रूप में श्रीहर्ष ने अपनी कृति में प्रस्तुत किए हैं, जिन्हें शोध पत्र के माध्यम से उजागर किया गया है। गीता के सिद्धांतों, दर्शन की ग्रहणीए महत्वपूर्ण बातों को प्रकाशित करना प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है जो 'नैषधीयचरितम्' में व्याप्त है।

साहित्यावलोकन

'नैषधीयचरितम् का काव्य शास्त्रीय अध्ययन' (2017) विषय पर शोध कार्य किया गया। प्रस्तुत शोध में बताया है कि नैषधीयचरितम् के प्रधान पात्र नल और दमयंती हैं, संपूर्ण कथा इन्हीं के इर्द–गिर्द घूमती है। नैषधीयचरितम् के 17 सर्ग में उनका चार्वाक दर्शन संबंधित सिद्धांत वर्णित है। हंस को एक कुशल दूत के रूप में चित्रित किया है। नैषधीयचरितम् को अलंकारों का सागर बताया है प्रस्तुत शोध में कहा है कि नैषधीयचरितम् का आनंद वही ले सकता है, जिसे अलंकार शास्त्र के साथ– साथ न्याय, वैशेषिक, सांख्य ,योग, वेदांत, मीमांसा, चार्वाक, बौद्ध, जैन और गीता दर्शन का भली–भाँति ज्ञान हो। प्रस्तुत शोध काव्यशास्त्र संबंधित है परंतु इसमें दार्शनिक ज्ञान पर भी जोर दिया गया है। शोधार्थी का प्रयास रहा है कि उसने काव्यशास्त्र के मर्म के साथ–साथ दर्शन को भी प्रस्तुत करने का अपने शोध में भरसक प्रयास किया है, जो सफल भी रहा है।

'नैषध महाकाव्य के पौराणिक संदर्भ की समीक्षा' (2017) विषय पर सफलतापूर्वक शोध कार्य किया। शोधार्थीमंजूल कुमारी ने श्रीहर्ष के विषय में अपनेशोधमेंबताया कि वह समस्त दर्शनों के अद्वितीय विद्वान थे। उन्होंने दर्शनों का केवल शास्त्रीज्ञान ही नहीं प्राप्त किया अपितु श्रवण, मनन द्वारा दर्शन को अपने जीवन का एक अभिन्न अंग बना लिया। अपने तर्कों के आधार पर श्रीहर्ष

ने खण्डनखण्ड खाद्य में प्रति तंत्र सिद्धांतों का उन्हीं की युक्तियों से खण्डन करते हुए वेदांत सम्मत अद्वैत ब्रह्म की स्थापना की, उन्होंने सभी दर्शनों के महत्वपूर्ण सिद्धांतों का उल्लेख नैषधीयचरितम महाकाव्य में सफलतापूर्वक किया है।

'नैषधीयचरितम् में अलंकार योजना (2017)' वंदना पांडे द्वारा वीबीएस पूर्वांचल विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में पीएचडी उपाधि के लिए शोध कार्यकिया, जिसमें उन्होंने बताया कि किस प्रकार से महाकवि ने नैषधीयचरितम् में अलंकारों को प्रयुक्त किया है और साथ में गूढ सिद्धांतों को भी प्रतिपादित किया है। यह महाकवि की विशेषता ही है जो कि दोनों अलग–अलग विधाओं को समाहित करके उन्होंने प्रस्तुत किया है।

'नैषधीयचरितम् महाकाव्य में क्रिया पदों का प्रयोग एक अध्ययन' (2017) इस विषय पर शोधार्थी पवन कुमार ने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ में प्रोफेसर शंकर झा के पर्यवेक्षण में पीएचडी उपाधि के लिए शोध कार्य किया। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने नैषधीयचरितम् में विद्यमान क्रिया पदों को ही प्रमुखता दी है, जिससे नैषधीयचरितम् में उल्लिखित व्याकरणगत क्रियापदों का निर्माण कार्य सरल रहेगा। पवन कुमार शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र में नैषधीयचरितम् में आए क्रियापदों के विषय पर अध्येताओं का ध्यान आकर्षण किया है। यह विषय व्याकरण और काव्य शास्त्रीय अध्ययन दोनों ही दृष्टि से सभी के लिए उपायोगी हैं।

'नैषधीयचरितम् में चौसठ कलाएँ: एक पर्यवेक्षण'(2018) में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनूं राजस्थान में शोधार्थी डिंपल चुग द्वारा शोध निर्देशक डॉ समणी संगीत प्रज्ञा के निर्देशन में विषय पर पीएचडी की उपाधि के लिए शोध किया है। शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध में नैषधीयचरितम् में वर्णित चौसठ कलाओं के विषय में वर्णन किया है। शोध में बताया गया है कि कला जीवन और दर्शन की अभिव्यक्ति के साथ–साथ मानव जीवन की सांस्कृतिक साधना एवं आध्यात्मिक साधना से संबंधित है। शोधार्थी ने यह भी बताया है कि कला हमारे जीवन का आधार है। इसमें विविध कलाओं के विषय में बताया है नैषधीयचरितम् में वर्णित सर्वप्रथम कला संगीत, दूसरी कला वाद्य कला, तीसरी नृत्य कला, चतुर्थ कला चित्रकला को बताया है। चित्रकला लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रयोजनों को सिद्धि कराती है। इसके अतिरिक्त नैषधीयचरितम् में वर्णित गांधर्व कला, आयुर्वेद मेंवर्णित कलाएँ, काव्य निपुण कलाएँ इत्यादि विविध कलाओं का वर्णन है जिसे प्रस्तुत शोध द्वारा प्रकाश में लाया गया हैं।

पंच महाकाव्य में पर्यावरण दिसंबर (2020) अंजुम परवीन द्वारा मध्यप्रदेश के भोपाल में बरकतउल्ला विश्वविद्यालय में संस्कृत विषय में पीएचडी उपाधि के लिए अपना शोध कार्य किया। जिसमें इन्होंने कुमारसंभवम् , नैषधीयचरितम् , शिशुपालवधम, रघुवंशम, किरातार्जुनीयम् को अपने शोध का आधार बनाते हुए पर्यावरण सजगता के विषय पर अपना शोध किया है। शोधार्थी का ऐसा कहना है कि उनकाशोध पर्यावरण की रक्षा का संदेश देता है और ऐसे विकट समय में जब हम पर्यावरण की समस्याओं से जूझ रहे हैं। हमारा पर्यावरण बद से बदतर स्थिति में होता जा रहा है ऐसे समय में ऐसे शोध हमारे समाज में नवीन ऊर्जा को प्रस्फुटित करते हैं। हमारे वेद,धर्म शास्त्रों में ऐसे अनेकों दृष्टांत हैं जो हमें पर्यावरण के प्रति सचेत करते हैं, उन्हें सबके सामने लाना ऐसे शोध का परम उद्देश्य होता है जो हम सब की नैतिक जिम्मेदारी भी है।

प्राक्कल्पना

शोध पत्र लेखन से पूर्व जो मेरे द्वारा कल्पना की गई थी कि नैषधीयचरितम् में विविध दार्शनिक तत्वों का पुट समाहित है और अंत में मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँची, यह बात सिद्ध हुई कि मेरी पूर्व कल्पना अथवा प्राक कल्पना सही सिद्ध हुई।

क्रिया विधि

इस शोधपत्र लेखन में विवरणात्मक क्रिया विधि को अपनाया गया है जिसके लिए संबंधित साहित्य को एकत्रित कर अध्ययन करने के पश्चात लेखन कार्य किया गया है।

अनुसंधान का रेखा चित्र

अनुसंधान का यदि रेखा चित्र खींचा जाए तो सर्वप्रथम मेरे द्वारा भारतीय दर्शनों और गीता का अध्ययन करने के उपरांत नैषधीयचरितम् का अध्ययन किया तो मुझे ज्ञात हुआ कि सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और गीता आदि के सिद्धांतों को पाठक तक पहुंचाने का श्रीहर्ष द्वारा जो सफल कार्य किया गया है वह अत्यंत ही अद्भुत है । अलग–अलग दर्शनों को आधार स्वरूप रख मेरे द्वारा नैषधीयचरितम् में किस प्रकार से उसे प्रस्तुत किया गया है, शोध पत्र में उस पर प्रकाश डाला है

शोधपत्र

श्रीहर्ष के नैषधीयचरितम् में व्याप्त दार्शनिक तत्व

संस्कृत महाकाव्यों के क्षेत्र में महाकवि श्रीहर्ष का नाम उनकी अमूल्य कृति 'नैषधीयचरितम्' के कारण सदैव अविस्मरणीय रहेगा। श्रीहर्ष ने नल और दमयन्ती को आधार बनाकर 22 सर्गों में विशालकाय महाकाव्य की रचना की है। नैषधीयचरित महाकाव्य पौराणिक 'नलोपख्यान' पर आधारित है परन्तु श्रीहर्ष ने मूलकथा को महाकाव्य का रूप प्रदान करने के निमित्त अपनी कल्पना शक्ति का भी संयोजन किया है। संसार में प्रत्येक व्यक्ति का चिंतन दूसरे व्यक्ति से किसी न किसी रूप में भिन्न होता है। महाकवि भी सामान्य व्यक्ति के समान दार्शनिक अनसुलझे विषयों पर अनवरत चिंतन करता रहता है। उसी के परिणामस्वरूप कवि की कृतियों में भी दार्शनिक विषयों को भी प्रायः सम्मिलित किया जाता है। इसी प्रकार महाकवि श्रीहर्ष ने भी अपने महाकाव्य नैषधीयचरित में सृष्टि, परलोक, भाग्यवाद, पुनर्जन्मवाद, आत्मा–परमात्मा, कर्मफल, मोक्ष, स्वर्ग–नरक इत्यादि दार्शनिक विषयों पर प्रकाश डाला है और विशेष रूप से 17वॉ सर्ग तो महाकवि के दार्शनिक चातुर्य को प्रदर्शित करने में पूर्णरूपेण सफल है।

महाकवि श्रीहर्ष दर्शनों के प्रकाण्ड़ पण्डित थे उनके तर्क प्रतिद्वन्द्वी विद्वानों द्वारा अकाट्य होते थे।[1] वह न केवल ज्ञाता थे अपितु उन्हें परमानन्द का साक्षात्कार हो गया था।[2] वह अद्वैत वेदान्त के विद्वान थे और अद्वैत वेदांत का चूड़ामणि ग्रन्थ ''खण्ड़न खण्ड खाद्य'' श्रीहर्ष

द्वारा रचित है। भारतीय दर्शन के दृष्टांत नैषधीयचरितम् में दृष्टव्य है।

सांख्यदर्शन

सांख्यदर्शन के प्रणेता महर्षि कपिल द्वारा सांख्यसूत्र इस दर्शन का आदिग्रन्थ है। जिसमें 25 तत्वों को स्वीकार किया है। प्रकृति और पुरूष दोनों के सानिध्य द्वारा सृष्टि होती है। सृष्टि कार्यावस्था है। प्रलयावस्था में प्रत्येक कार्य अपने कारण में लीन हो जाता है। सांख्यकारिका में ईश्वरकृष्ण ने 9वीं कारिका में सत्कार्यवाद की सिद्धि हेतु 5 तर्क दिये हैं।[3] इसी प्रकार नैषधीयचरित में भी सत्कार्यवाद का संकेत महाराज नल के कथन में व्यक्त हुआ है। नल इन्द्रादि देवताओं को याचक रूप में देखकर आनंद विभोर होकर कहते हैं ''जन्य जनक में विभेद नहीं होना और मनुष्य शरीर अन्न से उत्पन्न हैं, यह कथन भी सत्य है। आप लोगों को देखकर मेरी दृष्टि अमृत भंजन सा कर रही है।''[4]

योग दर्शन

इसी प्रकार महर्षि पतंजलि कृत योगसूत्र में भी बताया है कि सिद्ध योगी में दूसरे शरीर में प्रवेश की सामर्थ्यता आ जाती है वह परमाणु जो अत्यन्त सूक्ष्म होता है, उसका प्रत्यक्ष करवाने की क्षमता से युक्त होता है। ठीक उसी प्रकार श्रीहर्ष ने दमयन्ती के अन्तःपुर में अदृश्य रूप से भ्रमण करते हुए महाराज नल के चित्रण में इसी योग विभूति की कल्पना की है – ''वियोगी नल अदृश्य होकर मणि युक्त भूमि में प्रतिबिम्बित होकर विशाल आकृति को धारण करते हुए अर्थात् दूसरे के शरीर में प्रवेश करते हुए योगी सदृश प्रतीत होते हैं। यह अचरज की बात है।''[5] इसी प्रकार स्वयंवर सभा में पाँच नल को देखकर दमयन्ती सोचती है कि यह नल अनेक रूप धारण करने की कला में कही निपुण तो नहीं है ? जिस तरह वह अश्व के भावज्ञान की कला के ज्ञाता है उसी प्रकार योग की महिमा से शरीर समूह धारण किये हुए हैं। योगसूत्र में दो प्रकार की समाधि– सबीज और निर्बीज समाधि का वर्णन मिलता है। सबीज समाधि जिसे सम्प्रज्ञात समाधि भी कहते हैं जिसमें ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान का भेद बना रहता है। दूसरी ओर निर्बीज समाधि जिसे असम्प्रज्ञात समाधि भी कहते हैं जिसमें ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय का भेद समाप्त हो जाता है, केवल संस्कार मात्र शेष रहते हैं। इसी प्रकार नैषधीयचरित में भगवान विष्णु की अराधना करते हुए महाराज नल सम्प्रज्ञात समाधि में लीन हो जाते हैं। यहाँ श्रीहर्ष ने योगदर्शन की सम्प्रज्ञात समाधि का संकेत दिया है।[6]

न्याय दर्शन

श्रीहर्ष ने नैषधीयचरितम् में न्याय दर्शन का भी उल्लेख किया है। न्यादर्शन में कार्य की उत्पत्ति में 3 कारण स्वीकार किये हैं। समवायी, असमवायी और निमित कारण। समवायी कारण, कार्य से साक्षात सम्बन्धित होता है। हंस दमयन्ती को बताता है कि उसका सोने का शरीर स्वर्ग गंगा की स्वर्ण कमलनियों को खाने के कारण हुआ है।[7] न्यायदर्शन में मन को एक और अणुपरिमाण वाला बताया है। इस सिद्धान्त का संकेत राजा नल के अश्वों द्वारा उड़ाई गई धूली के प्रसंग में मिलता है यथा – महाराज नल के वेगगामी अश्व के द्वारा उड़ाई गई धूलि के कण ऐसे लगते हैं मानों लोगों के असंख्य मन (परमाणु रूप) अश्व से वेगातिशय की शिक्षा लेने आये हैं।[8] न्यायदर्शन में प्रत्यक्ष प्रमाण के लिए एक विशेष प्रक्रिया जिसे न्याय सूत्र (3/1/34–46) में बताया है उसके अनुसार हमारी चक्षुन्द्रियों में रश्मियाँ होती है जब किसी वस्तु से रश्मियों का सन्निकर्ष होता है तब उस वस्तु का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। नैषध में एक स्थल पर ''राजा नल की अभिलाषा सहित नेत्ररश्मियाँ दमयन्ती के शरीर तक पहुँच भी न पाई थी कि कामदेव का बाण दमयन्ती के प्रत्येक अंग में प्रविष्ट हो गया''[9], प्रत्यक्ष ज्ञान की ओर संकेत करता है। न्यायदर्शन में वर्णित षोड्श पदार्थों की साम्यता वाला दृष्टान्त नैषध में वर्णित है यथा – ''नाम–निर्देश तथा लक्षण निर्देश के समय दो बार कहे गये षोड्श पदार्थों से उपलक्षित जिस सरस्वती देवी के दाँतों की दोनों पंक्तियों को हम मुक्ति चाहने वाले लोगों द्वारा सेवित न्याय विद्या समझते हैं।[10] न्याय दर्शन में वास्तविक ज्ञान प्रमा, अवास्तविक ज्ञान अप्रमा बताया है। महाकवि श्रीहर्ष ने कलि को समझाते हुए इन्द्र कथन के प्रसंग में कहा है कि ''जिस प्रकार प्रमाज्ञान अप्रमा द्वारा बाधित नहीं हो सकता उसी प्रकार दमयन्ती (प्रमा) को व्यर्थ ही तुम्हारे जैसे दुराचारी (अप्रमा) कैसे पीड़ित कर सकते हैं ? अहो आश्चर्य है ?[11] प्रस्तुत दृष्टांत में प्रमा और अप्रमा पर प्रकाश डाला गया है।

वैशेषिक दर्शन

वैशेषिक दर्शन में सृष्टि प्रक्रिया का भौतिक और वैज्ञानिक वर्णन किया है जिसके अनुसार 'अणु' सबसे सूक्ष्म इकाई है। दो परमाणु अथवा अणु से मिलकर द्वयणुक, तीन मिलकर त्रस्रेणु, चार अणु मिलकर चतुर्णु बनते हैं। इस प्रकार स्थूल रूप में होते हुए परमाणुओं द्वारा जगत सृष्टि होती है। इसी के सम्बन्ध में श्रीहर्ष ने वर्णन किया है कि हंस दमयन्ती से कहता है कि – परस्पर बढ़ते समागम से विलास से राजा नल और तुम्हारा (दमयन्ती) मन कामदेव की नूतन सृष्टि करने के लिए द्वयणुक का निर्माण करने वाले परमाणु द्वय के समान सुशोभित है।[12] इसी प्रकार दमयन्ती द्वयणुक के समान क्षीण कटि वाली दमयन्ती, हंस के उड़कर चले जाने पर अधीर हो गई है, मानो यह अधीरता दमयंती ने हंस से सीखी है क्योंकि जो जिसके बाद बिना व्यवधान के होता है उससे उत्पन्न माना जाता है।[13] यहाँ वैशेषिक दर्शन का कार्य कारण सिद्धान्त लागू होता है क्योंकि जो नियत रूप से कारण के पश्चात् हो और जिसकी सत्ता अन्यथासिद्ध न हो, वह कार्य कहलाता है ।[14] भारतीय दर्शन में कार्य कारण का सिद्धान्त बहुत प्रचलित है। श्रीहर्ष ने भी कार्य कारण के सिद्धान्त को दमयन्ती और हंस की चेष्टाओं के माध्यम से स्पष्ट किया है कि हंस कारण है दमयंती की अधीरता कार्य है जिसमें कारण है हंस। वैशेषिक दर्शन को औलूक दर्शन, कणाद दर्शन भी कहते हैं क्योंकि तमस का निरूपण करने में वैशेषिक दर्शन ही समर्थ है। उसी प्रकार राजा नल दमयंती से कहते हैं कि – तमस के स्वरूप निरूपण के विषय में मुझे वैशेषिक दर्शन प्रिय है क्योंकि अंधकार का वास्तविक व सटीक निरूपण करने में वैशेषिक दर्शन प्रचलित और समर्थ है।

मीमांसा

महाकवि श्रीहर्ष ने अपने महाकाव्य में पूर्व मीमांसा अर्थात् कर्मकाण्ड और उत्तर मींमासा अर्थात् ज्ञान काण्ड दोनों का ही आश्रय लिया है। श्रीहर्ष ने देवी सरस्वती का वर्णन करते हुए दोनों का आधार बताया है कि – मानो वेद को दो भागों में विभाजित करता हुआ मीमांसा शास्त्र पूर्व और उत्तर मीमांसा भेद से सरस्वती के दोनों जंघायुगल के रूप में विराजमान था।[15]

स्वर्णिम हंस को देखने के लिए दमयंती की सखियों के नेत्र अन्य विषयों को छोड़कर उसमें ही लग गये। जिस प्रकार योगी का चित अन्य विषयों को छोड़कर अनिर्वचनीय रूप ब्रह्म में लग जाता है और जिस प्रकार ब्रह्मदर्शन के लिए किसी महर्षि की मनोवृत्ति निश्चिल हो जाती है, उसी प्रकार हंस को पकड़ने के लिए दमयंती की मनोवृत्ति भी निश्चिल हो गई। उन्होंने माना है कि संसार में एक ही सत्ता विद्यमान है हमें अपनी इच्छानुरूप से भेद प्रतीत होते हैं। ‘‘एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति’’ अर्थात् सत्य सत्ता एक की है जिसे विद्वान लोग विविध प्रकार से कहते हैं।

जैन दर्शन

श्रीहर्ष के महाकाव्य में जैन दर्शन का संकेत न्यून मात्रा में मिलता है। जैन दर्शन में स्वीकृत त्रिरत्न–सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चरित्र द्वारा ही निर्वाण की प्राप्ति बताई है। श्रीहर्ष ने दमयंती के माध्यम से त्रिरत्न का संकेत दिया है।[16]

बौद्ध दर्शन

श्रीहर्ष ने देवी सरस्वती के उदर का वर्णन करते समय उसे बौद्धों के शून्यवाद रूप उदरवाली बताया है। महाराजा नल भगवान विष्णु के अवतार ‘‘बुद्ध’’ की उपासना करते हुए उन्हें अद्वयवादी और विधुतकोटि चतुष्कः (चारों कोटियों – सत्, असत्, सदसत् तथा सदसद् विलक्षण से परे) कहते हैं।

चार्वाक दर्शन

आचार्य ब्रहस्पति ने अग्निहोत्र, वेद, त्रिदण्ड धारण करने, भस्म व तिलक लगाने को पौरूषहीन लोगों की जीविका का साधन बताया है।[17] इसे नैषध महाकाव्यकार ने भी स्वीकार किया है। इसी प्रकार श्रीमद्भगवदगीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि आत्मज्ञानी व्यक्ति पाप और पुण्य रूपी कर्मों के बंधन से पृथक हो जाता है।[18] उसी प्रकार श्रीहर्ष ने राजा नल के लिए कहा है कि आत्मज्ञानी उस नल को दमयंती के साथ दिन और रात भोग करते हुए लेशमात्र भी पाप ने नहीं छुआ है क्योंकि ज्ञान से निर्मल मन वाले व्यक्ति को विषयों में कृत्रिम एकाग्रता दूषित नहीं करती है।[19]

आत्मा व परमात्मा सम्बन्धित विश्वास

महाकाव्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि श्रीहर्ष मूलतः अद्वैतवाद के समर्थक थे। श्रीहर्ष ने अपने महाकाव्य में आत्मा को अजर, अमर और शाश्वत स्वीकार किया है और वह यह भी मानते थे कि पूर्वजन्म के किये गये कार्यों का प्रभाव आगे आने वाले जन्मों पर भी दृष्टिगत होता है।[20] श्रीहर्ष के महाकाव्य के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज में आत्मा से तात्पर्य जीवात्मा से और परमात्मा का तात्पर्य ब्रह्म से था। जो व्यक्ति जीवात्मा और परमात्मा को द्वैत नही अद्वैत स्वीकारता है वह आत्मज्ञानी होता है। ऐसा आत्मज्ञानी व्यक्ति विषय भोगों को भोगते हुए भी उनसे निर्लिप्त रहता है, वह विषयों का भोग निष्काम भाव से करता है।[21] श्रीमद्भगवदगीता में भी भगवान श्री कृष्ण ने ऐसा व्यक्ति जिसका चित्त स्थिर है, जो निष्काम भाव से कर्मों को करता है उसके लिए कहा है कि ‘‘ऐसा योगी जो सुख और दुःख में समानता का व्यवहार करता हुआ, आसक्ति का त्याग कर, योग में स्थित होता है क्योंकि ऐसे योगी का सिद्धि और असिद्धि में समानता का, निष्काम भाव से किया गया व्यवहार ही योग है।[22]

जब जीवात्मा का परमात्मा के साथ तादात्मय स्थापित हो जाता है तो केवल शुद्ध ब्रह्म ही शेष रह जाता है उस समय ‘‘एकमेवाद्वितीयं ब्रह्मं’’ की अवधारणा की पुष्टि होती है। नैषधीयचरित के 21वें सर्ग में भगवान विष्णु की अराधना करते हुए भगवान विष्णु का वर्णन निम्न रूप में किया है – (हे विष्णो ! सृष्टि से पूर्व यह) संसार ब्रह्मरूपिणी तुम्हारी शक्ति रूपी लता में स्थित रहा फिर (सृष्टि के पश्चात् तुम्हारे ही अंश) शेषनाग के मस्तक पर रहा (प्रलयकाल में) बालक रूपधारी आपके उदर में रहा, अतः तुम्हीं सभी प्रकार से तीनों लोकों के आश्रय हो।[23] अतः श्रीहर्ष परब्रह्म परमात्मा को सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और विलय का कारण स्वीकार करते हैं।

परलोक सम्बन्धित मान्यता

भारतीय संस्कृति में प्रायः परलोक के विषय पर लोगों की आस्था बहुत प्रबल है। इसी प्रकार नैषधीयचरित में वर्णित समाज में भी परलोक के विषय में लोगों की आस्था थी। एक वर्ग नास्तिक विचारधारा को भी मानने वाला था। दान की अत्यंत प्रसिद्धि थी। सत्पात्र को दिया गया दान परलोक में अन्नतगुना होकर प्राप्त होता है।[24] परलोक के देवता के रूप में यम को स्वीकार किया गया और वह ही मृत्युदेवता माना जाता था।[25] समाज में ज्ञानी व्यक्ति स्वर्ग सुख की प्राप्ति के लिए उत्साहित नहीं रहते थे अर्थात् स्वर्ग सुख से श्रेष्ठ ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति की ओर लोगों की प्रवृत्ति भी देखी जाती थी। प्रायः प्रत्येक भारतीय दर्शन का अंतिम ध्येय मोक्ष को ही स्वीकार किया है जिसे विविध दर्शनों में अलग–अलग संज्ञा दी है यथा मोक्ष, निर्वाण, अपवर्ग, कैवल्य इत्यादि नामों से जाना जाता है।

सृष्टि और प्रलय सम्बन्धी मान्यता

सृष्टि कब, कैसे, किसके द्वारा और प्रलयावस्था में क्या होता है इत्यादि, ऐसे विषय सदैव दार्शनिकों के चिंतन का केन्द्र रहे हैं। नैषधीयचरित में भी सृष्टि और प्रलय सम्बन्धित विविध संकेत मिलते हैं। ब्रह्मा को जगत निर्माता, भगवान विष्णु को पालनकर्ता और भगवान शिव को सृष्टि के संहारक रूप में चित्रण किया है।[26]

ब्रह्मा को ही दिन और रात्रि का निर्माता, चन्द्रमा आदि का संस्थापक एवं समस्त लोकों का निर्माता बताया गया है। महाराजा नल और दमयन्ती के सौन्दर्य वर्णन के प्रसंग में कवि ने इस प्रकार संकेत दिया है।[27] सृष्टि के विषय में वैशेषिक दर्शन का अनुसरण किया है कि अणुओं के संयोग से स्थूल सृष्टि का निर्माण होता है। अतः नैषधीयचरित में श्रीहर्ष ने सृष्टि और प्रलय सम्बन्धित दार्शनिक तत्वों को भी संकेतिक किया है।

मृत्यु और मोक्ष सम्बन्धी मान्यता

दार्शनिकों के अनुसार जन्म और मृत्यु का चक्र अनवरत गतिशील है। संसार में विरले ही मनुष्य ब्रह्म ज्ञान प्राप्त कर जन्म और मृत्यु के बंधन को तोड़ पाते हैं। नैषध में भी पुरूषार्थचतुष्ट्य में मोक्ष को सर्वोपरि स्थान, तत्पश्चात् धर्म, अर्थ व काम को स्थान दिया गया है। तीर्थों का विशेष महत्व बताया गया है कि तीर्थों में प्राणत्याग करने वाला व्यक्ति मोक्ष का अधिकारी होता है। मोक्ष सरलता से नहीं प्राप्त होने वाला, कठिनता से प्राप्त होने वाला है। मोक्ष प्राप्ति में वाराणसी का सर्वाधिक प्रतिपादन किया है, वैसे तो मुक्ति सांसारिक विषयों का परित्याग करने के पश्चात् ही उपलब्ध होती है परन्तु भगवान शंकर की नगरी काशी में साधना के बिना ही केवल काशी में वास करने से ही व्यक्ति मोक्ष का अधिकारी हो जाता है।[28]

कर्मवाद, भाग्यवाद और पुनर्जन्म सम्बन्धित मान्यता

महाकवि श्रीहर्ष की कर्म, भाग्य और पुनर्जन्म के सिद्धान्तों में पूर्ण आस्था थी। उनका यह विश्वास उनके महाकाव्य में विविध स्थलों पर दृष्टिगोचर भी हुआ है यथा – महाराज नल के काम द्वारा पीड़ित होने पर अकस्मात् हंस का उपस्थित होना, महाराज नल के भाग्य के कारण ही संभव हो पाया।[29] संतान न होना में अदृष्ट को कारण माना गया (नैषध–17 / 88)। महाकाव्यकार का मानना है कि व्यक्ति स्वेच्छा से कुछ नहीं करता वह भाग्यानुसार ही सारी क्रियाओं को करता है जैसे चकवा–चकवी का विरह भाग्याधीन है, नहीं तो संसार में अपने को दुःखी कौन करेगा ? अतः संसार की समस्त प्रवृतियाँ भाग्याधीन है। हम कुछ भी करने में स्वतंत्र नहीं है, भाग्य पर निर्भर है और भाग्य के मूल में विद्यमान है हमारे कर्म। संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण त्रिविध कर्म मनुष्य के भाग्य निर्माता है। व्यक्ति इन कर्मों के अधीन होकर सुख व दुःख भोगता है। यदि सुकर्म अधिक है तो सुखी और इसके विपरीत यदि कुकर्म अधिक है तो व्यक्ति को दुःखों को भोगना पड़ता है। राजा हो या रंक सभी कर्मानुसार जीवन जीने को बाधित है तभी तो भगवान श्रीराम जिनका राज्याभिषेक होने जा रहा था परन्तु भाग्य की विडम्बना उन्हें चौदह वर्षो का वनवास मिला।

कर्मवाद का दृष्टान्त नैषधीयचरित में दृष्टव्य है यथा – सूर्य अपने तेज से चन्द्रमा को अभिभूत कर देता है, फलस्वरूप नादर जी के तेज से सूर्य को भी निस्तेज होना पड़ा, इस संसार में अपने किये कर्मों के फलों को कौन नहीं भोगता?[30] संसार में त्रिविध कर्मों के फलों को भोगता हुआ जीव 84 लाख योनियों से विचरण करता हुआ कर्मानुरूप सुख और दुःख का भागी बनता है। कर्मों का यह प्रवाह लगातार चलता रहता है। नैषधचरित में कर्मों के प्रवाह से मुक्ति के लिए भगवान विष्णु के ध्यान की ओर संकेत किया है।[31]

भारतीय संस्कृति में पुनर्जन्म के सिद्धान्त को भी मान्यता प्राप्त है। श्रीहर्ष ने नैषधीयचरित में भगवान इन्द्र द्वारा नल और दमयन्ती को अगले जन्म में भगवान शिव और पार्वती के साथ सायुज्य प्राप्ति का आर्शीवाद दिलाया जिससे नल और दमयंती अगले जन्म की चिंता से मुक्त हो जाये[32] और अन्य स्थल पर दमयंती अपने पूर्व जन्म के कर्मफलों के कारण ही राजा नल पर अनुरक्त हुई, नल रूप धारण करने वाले इन्द्रादि देवताओं के प्रति नहीं।[33]

निष्कर्ष

महाकाव्यकार श्रीहर्ष के नैषधीयचरित के अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि नैषधीयचरित एक श्रृंगार प्रधान रचना है परन्तु इसमें दार्शनिकता का पुट भी समाहित है। महाकवि ने बताया है पुरूषार्थ चतुष्ट्य में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में समन्वय की आवश्यकता है क्योंकि इनका समन्वय ही मानव जीवन को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् बनाने की क्षमता रखता है। नैषध में चित्रित प्रमुख पुरूष पात्र 'नल' जो विभिन्न भोग–संभोगों से युक्त होने पर भी पुष्प पलाशवत् निर्लिप्त रहते हैं। निष्काम कर्मयोग को मोक्ष का सरलतम उपाय बताया है अर्थात् बिना स्पृहा कामों को करने की लालसा व्यक्ति को आदर्श बनाती है उसे जन्म और मृत्यु के बंधन से छुटकारा दिलाने में भी समर्थ बनाती है क्योंकि व्यक्ति के जीवन का सबसे बड़ा दुःख है बार–बार जन्म और मृत्यु। अतः निष्काम कर्मयोग द्वारा कर्मों के बंधनों को शिथिल कर आवगमन से मुक्ति पाई जा सकती है। साथ ही विविध तीर्थों व दान द्वारा भी मनुष्य जीवन को सफल बना सकता है। श्रीहर्ष ने नैषधीयचरित में विविध दर्शन, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा, उत्तर मीमांसा, गीता दर्शन के सिद्धान्तों को स्थान दिया है, राजा नल और दमयंती की प्रणय कथा को विस्तारित करने हेतु विविधि भारतीय दर्शनों से सिद्धान्त लेकर उदाहरण रूप में प्रस्तुत किये हैं जिससे वह तथ्य और भी अधिक सरल व बोधगम्य हो सके।

श्रीहर्ष अद्वैतमतावलम्बी तथा समाधि में साक्षात् परब्रह्म से तादात्मय स्थापित करने वाले कवि है, वह अन्य देवी–देवताओं के प्रति भी सहिष्णु रहे हैं और उन्होंने नास्तिक दर्शन की मान्यताओं का तर्क द्वारा खण्डन भी किया है। इनके महाकाव्य में प्रमुख रूप से भगवान विष्णु और शिव का सर्वाधिक वर्णन मिलता है जो भगवान विष्णु और शिव के प्रति अटूट भक्ति का द्योतक है और विशेषकर भगवान 'विष्णु' के प्रति इनकी गहरी श्रृद्धा दृष्टिगोचर होती है। ब्रह्म सम्पूर्ण सृष्टि का रचयिता है, हम सब कर्मों के अधीन होकर फल भोगते है, संसरण करते हैं। मोक्ष प्राप्ति का मार्ग सरल नहीं है इसमें सांसारिक सुखों का परित्याग करना अनिवार्य है। मोक्ष परिश्रम साध्य है, अतः निष्काम कर्म द्वारा हम मोक्ष पथगामी बन सकते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण ने जिस प्रकार श्रीमद्भगवदगीता में आत्मा को अजर, अमर, अचल, अविकारी कहा है उसी रूप में श्रीहर्ष भी आत्मा को स्वीकारते है। सृष्टि के प्रसंग में वैशेषिक के 'परमाणुवाद' के सिद्धान्त के समर्थक है। श्रीहर्ष अद्वैतवाद के प्रबल समर्थक है। ऐसे दृष्टांत उनके महाकाव्य में भी स्थान–स्थान पर दृष्टिगोचर हुए हैं। विविध दर्शनों के मुख्य तत्वों को भी उन्होंने नैषधीयचरित में मूलकथा के साथ–साथ प्रस्तुत किया है जो श्रीहर्ष के दार्शनिक चातुर्य को प्रदर्शित करने में सफल रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

01. *घर्षित परास्तर्केषु यस्योक्तयः नैषधीचरित्म 22/4 प्रक्षि. कवि प्रशस्ति।*
02. *यः साक्षात् कुरूते समाधिपुरं ब्रह्म प्रमोदार्णवम् नैषधीयचरितम् 22/4, सटीक पं. हरगोविन्द शास्त्री, संस्करण–2010, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी।*
03. *असदकरणादुपादनग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात् शक्तस्य शक्यकरणात् कारण भावाच्य सत्कार्यम्। सांख्यकारिका, ईश्वरकृष्ण, भारतीय प्रकाशन, कानपुर।*
04. *नास्ति जन्य जनक व्यतिभेदः .... दृड़. निमन्जनमुपैति सुधायाम्। नैषधीयचरितम् 5/94*
05. *पुरं परस्य प्रविशन् वियोगी योगीव चित्रं रराज राजा, नैषधीयचरितम् 6/46*
06. *इत्युदीर्य स हरिं प्रति सम्प्रज्ञातवासिततमः समपादि नैषधीयचरितम् 21/104*
07. *स्वर्गापगाहेममृणालिनीनां नालामृणालाग्रभुजो भजामः। अन्नारूपां तनुरूपरिद्धिं कार्य निदानाद्धि गुणानधीते। नैषधीयचरितम् 3/17*
08. *............ चरणेषु रेणुभिः। रयप्रकर्षाध्ययनार्थमागतैर्जनस्य चेतोभिरिवाणिमांकितैः।। नैषधीयचरितम् 1/59*
09. *अपांगमप्याय ह्रशोर्न रश्मिर्नलस्य भैमिमभिलस्य यावत। स्मराशुगः सुभ्रुवि तावदस्यां प्रत्यगमापुंखशिखं ममंज नैषधीयचरितम् 8/03*
10. *उद्देशपर्वण्यपि लक्षणेऽपि द्विधोदितैः षोडशभिः पदार्थैः। आन्वीक्षकी यद्दशनद्विभावीं तां मुक्तिकायाकलितां प्रतीभः।। नैषधीयचरितम् – 10/82*
11. *सा विनीततमा भैमी व्यर्थानर्थग्रहौ रहो।कथं भवद्विधैर्बाध्या प्रमितिर्विभ्रमैरिव।। नैषधीयचरितम् 17/144*
12. *अन्योन्यसंगमवशादधुना विभातां .... द्वयणुककृत्परमाणु युग्वम् नैषधीयचरितम् 3/125*
13. *ध्रुवमधीतव्रतीयमधीरतां दयितदूतपतद्गतवेगतः स्थिति विरोधकरीं द्वयणुकोदरी तदुदितः स हियो यदनन्तरः।। नैषधीयचरितम् 4/03*
14. *अनन्यथासिद्धनियतपश्चाद्भावित्वं कार्यत्वम्– तर्कभाषा, पृ. 25 व्याख्याकार, डॉ. सुरेन्द्रदेवशास्त्री, भारतीय प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 1976*
15. *ब्रह्मार्थ कर्मार्थकवेदभेदात् द्विधा विधाय स्थितयाऽत्मदेहम्।चक्रे पराच्छादन चारू यस्या मीमांसया मांसलमूरूयुगमम्।। नैषधीयचरितम् 10/81*
16. *न्यवेशि रत्नत्रितये जिनेन यः स धर्मचिन्तामणिरूज्झितो या – नैषधीयचरितम् 09/71*
17. *अग्निहोत्रं त्रयो वेदास्त्रिदण्डं भस्मगुठंनम्। बुद्धिपौरूषहीनानां जीविकेति बृहस्पतिः।। सर्वदर्शनसंग्रह पृ. – 06, भाष्यकार डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी–2201001, संस्करण, 2004*
18. *आत्मवन्तं न कर्मणि निबन्धन्ति धनंजय – श्रीमदभगवदगीता 4/41 व्याख्याकार विश्वनाथ शर्मा, आदर्श प्रकाशन चौड़ा रास्ता, जयपुर।*
19. *आत्मवित्सह तया दिवानिशं भोजभागापि न पापमाप सः। आह्रताहि विषयैकतानता ज्ञानधीतमनसं न लिम्पति।। नैषधीयचरितम् 18/2*
20. *प्राग्भवैरूदगुदग्भवगुम्फान्मुक्तियुक्तिविहताविह तावत् – नैषधीयचरितम् 21/04*
21. *आत्मवित्सह तया दिवानिशं .... न लिम्पति, नैषधीयचरितम् 18/02*
22. *योगस्थः कुरू कर्माणि संग त्यक्त्वा धनंजय। सिद्धयासिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।। श्रीमदभगदगीता, द्वितीय अध्याय, श्लोक 48, व्याख्याकार – डॉ. विश्वनाथ शर्मा, आदर्श प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर–3*
23. *ब्रह्मवोऽस्तु तव शक्तिलतायां मूर्द्धिन विश्वमथ पत्युरहीनाम्। बालतां कलयतो जठरे वा सर्वथाऽसि जगतामवलम्बः।। नैषधीयचरितम्– 21/95*
24. *दानपात्रमधमर्णमिहैकग्राहि कोटिगुणिंतं दिवि दायि। साधुरेति सुकृतैर्यदि कर्तुं पारलौकिककुसीदमसीदत्।। नैषधीयचरितम् 5/92*
25. *नामभ्रमाद यमं नीतानथ स्वतनुमागतान्। संवादवादिनो जीवान् वीक्ष्य भा त्यजत श्रुतीः।। नैषधीयचरितम् – 17/105*
26. *लोकाश्रयो भण्डपमादिसृष्टि ब्रह्माण्डमाभात्यनुकाष्ठमस्य, नैषधीयचरितम् – 22/25*
27. *नैषधीयचरितम् 1/18, 21, 2/36, 22/57, 22/134।*
28. *निर्विश्य निर्विरति काशिनिवासि भोगान् निर्मायनर्म च मिधो मिथुनं यथेच्छम्। गौरीगिरीश घटनाधिकमेकभावं शर्मोर्मिकंचुकितमचति पंचतायाम्।। नैषधीयचरितम्–11/18*
29. *तदिहानवधौ निमज्जतो मय कन्दर्पशराधिनीरधौ। भव पोत इवावलम्बन विधिनाऽकस्मिकमसृष्टसन्निधि।। नैषधीयचरितम्–2/60*
30. *पर्यभूदिदनमाणिर्द्धजराजं यत्करैरहह तेन तदा तम्। पर्यभूत खलु करैर्द्विजराजः कर्म कः स्वकृतमत्रन भुड.क्ते।। नैषधीयचरितम् 5/06*
31. *प्राग्भवैरूदगुदग्भवगुम्फान्मुक्तियुक्ति विहताविह तावत्। नापरः स्फुरति कस्यचनाषि त्वत्समाधिमवधूय समाधिः।। नैषधीयचरितम् – 21/89*
32. *भवानपि त्वद्दयिताऽपि शेषे सायुज्यमासादयतं शिवाभ्याम्। प्रेत्यास्मि कीदृग्भावितास्मि चितां सतापमन्तस्तनुते हि जन्तोः।। नैषधीयचरितम् 14/771*
33. *जन्मान्तराधिगतकर्मविपाकजन्यैवोन्मीलति क्वचन कस्यचनानुरागः। नैषधीयचरितम् 13/38*